International Journal of Humanities and Arts 2023; 5(2): 41-43

ISSN Print: 2664-7699
ISSN Online: 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.00
IJHA 2023; 5(2): 41-43
www.humanitiesjournals.net
Received: 12-07-2023
Accepted: 18-08-2023

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह
सहायक आचार्य, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह
सहायक आचार्य, विभागाध्यक्ष (हिन्दी विभाग), राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

स्त्री विमर्श के संदर्भ में शिव प्रसाद सिंह की कहानियाँ

डॉ. रवीन्द्र कुमार सिंह

DOI: https://doi.org/10.33545/26647699.2023.v5.i2a.78

सारांश
पुरुष प्रधान भारतीय समाज में उपेक्षित नारी का स्वाभाविक रूप ग्रामीण समाज में मिलता है। शिवप्रसाद सिंह की अधिकांश कहानियाँ ग्रामीण समाज को चित्रित करती हैं। शायद यही कारण है कि वे प्रेमचंद की परंपरा से जुड़ते हैं। भारत का ग्रामीण समाज प्रगतिशील एवं आधुनिक विचारधारा से जुड़ने में संकोची रहा है। ऐसी परिस्थिति में शोषण एवं उत्पीड़न का जो मायावी खेल गाँवों में होता रहा है उसे शिवप्रसाद सिंह ने बखूबी अनुभव किया है। संभ्रांत एवं सामंती परिवार से होते हुए भी उन्होंने उस जड़ व्यवस्था की क्रूरता को उधेड़ने की कोशिश की है उनका कहना था –

कूटशब्द : स्त्री विमर्श, शिव प्रसाद सिंह, पुरुष प्रधान भारतीय समाज, क्रियाशक्ति

प्रस्तावना

"माना झुलस गयी मेरे हाथों की ऊँगलियाँ
आँधी की जद से, मैंने दिया तो बचा लिया।"[1]

शिवप्रसाद जी नारी को अलग सत्ता न मानकर समाज की क्रियाशक्ति के रूप में स्वीकार करते हैं। यह उनकी स्वीकारोक्ति है कि "नारी चित्रों के बारे में मुझे जितनी पाठकीय समझदारी मिली, उतनी पुरुष चित्रों के विषय में नहीं। मैं नारी को अलग–अलग सत्ता मानकर नहीं, समाज की क्रिया–शक्ति मानकर उसके बारे में सोचता हूँ। अति सामान्य समझी जानेवाली नारी ही मेरे लेखन में चित्रित है। मैं उसमें वर्गभेद नहीं करता, क्योंकि नारी में मुझे वर्गभेद कम नजर आये।"[2]

गाँवों में होने वाले अत्याचार–उत्पीड़न की जितनी बड़ी कीमत नारियों को चुकानी पड़ती है, किसी और वर्ग या जाति को नहीं। 'बरगद का पेड़'[3] की शीला तथा 'महुवे के फूल'[4] की सती इसकी साक्षी है। सती अपने बाप के कर्ज के बदले अनिच्छित पुरुष हीरा से शादी करने के लिए विवश होती है। यह ग्रामीण नारी जीवन की विडम्बना ही है। 'आर–पार की माला'[5] की नीरू इसी प्रकार के अत्याचार को झेलती है। नीरू को एक वेश्या बनकर रहना पड़ता है। अर्थाभाव के कारण वह ठाकुर के यौन शोषण का शिकार बनती है।

गाँव तो गाँव अपने परिवार में भी नारी का कोई अस्तित्त्व नहीं दिखाई देता है। 'केवड़े के फूल'[6] कहानी में अनिता को उसके माता–पिता उस व्यक्ति के पास उसे भेज देते हैं, जो पत्नी को मित्रों तक के मनोरंजन का साधन समझते हैं, क्योंकि मायके में रहने से उसकी बेइज्जती होती है। नारी विडंबना का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है। इस कहानी में अनिता और उसके पति के बीच के संबंधों में दरार पड़ जाती है। पति द्वारा उसे सार्वजनिक सम्पत्ति बनाने के प्रयास का वह विरोध करती है। भारतीय नारी की तरह वह केवल अपने पति की ही बनकर रहना चाहती है, किन्तु पति उसे अपने मित्रों को भी प्रसन्न रखने की जरूरत महसूस करता है। अनिता को विवश होकर सामाजिक मान–मर्यादा के नाम पर पति घर वापस जाना पड़ता है। पति के द्वारा लिखे गए उस अपमानजनक पत्र को पढ़ने के बाद भी वह उसके विरोध में किए गए अपने निर्णय पर अडिग रहने के लिए स्वतंत्र नहीं है। भारतीय नारी आज भी पुरुष के अमानवीय व्यवहार के आगे झुकने के लिए बाध्य है। उसका अपना कोई स्वतंत्र अस्तित्त्व नहीं है। उसे न तो पिता के घर में सम्मान मिलता है और न पति के घर। ऐसी अवस्था में स्त्री का जीवन विषाक्त हो जाता है। पति के शोषण के विरुद्ध खड़ी रहने का साहस उसमें नहीं है।

वस्तुतः आज भी गाँव की नारी के पैरों में परंपरागत रूढ़ियों की बेड़ियाँ इस प्रकार डाली गयी हैं कि उसे कोई रास्ता सूझता ही नहीं। गाँवों में दहेज जैसी रूढ़ियों में फंसकर कई स्त्रियाँ अन्याय सहने के लिए बाध्य हो जाती हैं।

CamScanner

'अंधकूप' कहानी की सोना भाभी सर्वगुण संपन्न होने पर भी दहेज–प्रथा के कारण ससुराल वालों के अत्याचार और हिंसा सहती है और एक दिन गाँव के अंधे कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर लेती है। सोना भाभी जैसी कितनी ही स्त्रियाँ इस दहेज प्रथा का शिकार होती रही हैं।

पुरुष प्रभावी समाज में पुरुषों के हजार ऐब माफ हैं, लेकिन उसके लिए भी नारी को ही यातना, उपेक्षा और अपमान झेलना पड़ता है। 'रेती' कहानी में गंगा भाभी की कोख छः साल तक नहीं भरती तो गवई मान्यता के अनुसार गाँव में होने वाले किसी भी अनिष्ट का कारण उसी को मान लिया जाता है। पति–सास सभी उसे सूखी रेती समझते हैं। उसके लिए समाज में कहीं भी स्थान नहीं है। उसे बेवजह अनेक यातनाएँ व अपमान झेलना पड़ता है, 'अंधकूप' की सोना भाभी की तरह वह भी दुःखी है।

नारी को आज जीविकोपार्जन का एक साधन मात्र समझा जाने लगा है। 'गंगा–तुलसी' कहानी की माँ पति की मौत के बाद बच्चों के पोषण के लिए विवशता के घेरे में आती है। गरीबी और दहेज के कारण नारी को किस प्रकार वीरान बना दिया जाता है, उसका उदाहरण ही 'नन्हों' कहानी है। दहेज देने में असमर्थ और गरीब नन्हों' का पिता उसकी शादी एक रोगग्रस्त लंगड़े और कुरूप लड़के के साथ करता है। इससे उसका सारा जीवन वीरान जंगल बनकर रह जाता है। इस कहानी में नन्हों विवाह के कुछ दिन बाद ही विधवा हो जाती है। उसकी शादी उसके देवर की तस्वीर दिखाकर दूसरे व्यक्ति से करवायी गयी थी। मिसरीलाल की मृत्यु के बाद रामसुभग मन–ही–मन नन्हों को चाहने लगता है। देवर भाभी के रिश्ते में दरार पड़ जाती है। विधवा भाभी नन्हों का देर रात तक पड़ोस में भजन–कीर्तन सुनने जाना रामसुभग को अच्छा नहीं लगता, लेकिन नन्हों देवर का विरोध करके अपनी मर्यादा को बनाए रखती है। वह देवर के प्रस्ताव को तो ठुकरा देती है, किन्तु मन–ही–मन उसे चाहने भी लगती है, प्रत्यक्षतः रूप से अपने प्रेम को वह प्रदर्शित करना नहीं चाहती। नन्हों का चरित्र भारतीय नारी के जीवन यथार्थ का परिचायक है।

'अरुंधती'[8] कहानी में लेखक ने झूठी वंश–मर्यादा के नाम पर विवश नारी का चित्रण किया है। इस कहानी की बड़की बहू पति और सास के प्रति पूर्ण श्रद्धालु है। किन्तु घर के नौकर हीरा को लेकर उसके चरित्र पर संदेह किया जाता है। सास और पति उसके गर्भस्थ शिशु को हीरा का ही अंश मानते हैं। पति और सास की इच्छा पूर्ण करने के लिए बड़की बहू दवा पीकर अपने गर्भस्थ शिशु की हत्या करने के लिए विवश हो जाती है। सास और पति की अधिकार–भावना के आगे बड़की बहू की शिक्षा एवं संस्कार भी क्षीण पड़ जाते हैं। ग्रामीण परिवेश में नारी के चरित्र को संदेह की दृष्टि से इसलिए देखा जाता है कि उसके पास पति या बेटे का समर्थन नहीं होता अतएव असहाय अवस्था में ही उसे अपना जीवन व्यतीत करना पड़ता है। 'बड़ी लकीरें', 'एक यात्रा सतह के नीचे', 'केवड़े का फूल', 'उपहार', 'आर–पार की माला' आदि कहानियाँ भी नारी की विवशता और असहायता दर्शाती हैं। 'मैं, कल्याण और जहाँगीरनामा', तथा 'सुबह के बादल' नारी के बदलते यथार्थ को व्यक्त करती हैं।

'उपधाईन मैया' में उपधाईन उच्च वर्ग की विधवा है। वह अपना जीवन जन–सेवा करने में बिताना चाहती है। किन्तु उसे भी कई आरोपों को झेलना पड़ता है। अर्थात् आज की स्त्री को कहीं स्वतंत्र होकर रहने नहीं दिया जाता। 'चरित्राहीन' कहानी में बाप अपने बेटे को किरायेदार की लड़की से संबंध बनाये रखने से मना करता है। किरायेदार चूँकि गरीब होते हैं। गरीबी के कारण लड़कियों को चरित्रहीन बनाता यह समाज उन्हें समाज के किसी कोने में ही दबाकर रखना चाहता है। उसी प्रकार 'प्रमाण–पत्र' की बेटी तथा 'अमृता' की अमृता इस पुरुष वर्चस्वी समाज में घुटन का अनुभव करती है।

अपने एक लेख में शिवप्रसाद सिंह ने भारतीय समाज में स्त्री और साधारण जन की स्थिति को लेकर डॉ. लोहिया के गहरे रोष और विचारों की चर्चा की है। शिवप्रसाद सिंह ने एक कहानीकार की हैसियत से स्वयं भी इन दोनों मुद्दों पर गहराई से चिंतन किया है और बहुत हद तक इसे अपने रचनात्मक सरोकार के रूप में अंगीकार भी किया है। स्वयं एक छोटे–मोटे जमींदार परिवार से आने के कारण कुछ लोगों ने सामंती मूल्यों के प्रति उनके अतिरिक्त उत्साह और हिमायत की शिकायत भी की थी।[9] शिवप्रसाद सिंह इस बात को स्वीकार भी करते हैं कि सामंती मूल्यों और तौर–तरीकों में भी सबकुछ बुरा ही नहीं था और यदि उनके कुछ पात्र उनके अच्छे गुणों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं तो वह उसे बुराई नहीं समझते। जहाँ तक शिवप्रसाद सिंह की कहानियों का सवाल है वे एक लेखक की हैसियत से, अपने वर्गगत संस्कारों से दूर तक मुक्त दिखाई देते हैं। उनकी कहानियों में गाँव की जनता और स्त्रियों पर अत्याचार करनेवाले अधिकांश लोग ठाकुर हैं, जमींदारी की कथित समाप्ति के बावजूद जिनकी मानसिकता और तौर–तरीकों में कोई खास बदलाव नहीं आया है। परवर्ती संदर्भों में इस वर्ग की राजनीतिक स्थिति और भूमिका की ओर से लेखक भले ही उदासीन रहा हो, लेकिन वर्तमान समाज की जड़ता और अवरुद्ध विकास में इस वर्ग की भूमिका को कहीं भी कम करके नहीं देखा है।

भारतीय समाज में स्त्री आज भी शोषण, उपेक्षा और अत्याचार की शिकार है। उसकी स्थिति 'केवड़े का फूल' की अनिता से बहुत भिन्न नहीं है। स्वयं पति द्वारा सार्वजनिक संपत्ति बनाए जाने की स्थिति का विरोध करने वाली अनिता को सामाजिक मान–मर्यादा के नाम पर उसके पिता उसके पत्ति के लिए रखैल रख लेने की उदारता दिखाने का उपदेश देते हैं, जबकि वह तो सिर्फ दूसरा विवाह ही कर रहा है। पति के उस अपमानजनक पत्र के बाद भी वह उसके विरोध में लिये गए अपने निर्णय पर अडिग रह सकने को स्वतंत्र नहीं है। कहानी के अंत में, किंचित् रोष के साथ टिप्पणी करते हुए 'मैं' लिखता हैः ''मैं अब भी जब कभी अनिता के बारे में सोचता हूँ, मेरे सामने केवड़े के फूलों की याद आ जाती है। यदि उन्हें स्वतंत्र खिले रहने दें, तो जहरीले साँप इन्हें अपनी गुंजलक में लपेट लेते हैं, क्योंकि इनकी मादक गंध सही नहीं जाती और यदि किसी को निवेदित किये जायें तो भद्र लोग इन्हें तोड़–मरोड़ कर कुएँ में फेंक देते हैं, क्योंकि इससे पानी खुशबूदार होता है।'[10]

व्यवस्था का यह 'अंधकूप' अपनी सामाजिक मान–मर्यादा के नाम पर उसके सड़ते हुए पानी के ऊपर से खुशबूदार बनाने के लिए न जाने कितनी कुँआरी छवियाओं और विवाहिता सोना भाभियों को अपने अकूत अंधेरे में छिपाए रखा है। इस अंधेरे को और गाढ़ा करने की भूमिका अदा करने वाले सोमू जैसे लोग भी अंततः अपने अंतर में पीड़ित हुए बिना नहीं रहते ''मैं बार–बार सोचता हूँ, सूचित भाई, कि हर गाँव में एक अंधा कुआँ क्यों होता है। हमारे कुएं पानी की मिठास या शीतलता के लिए प्रसिद्ध न होकर प्रेतात्माओं के लिए मशहूर क्यों होते हैं।'' नारी की इस विवशता और पीड़ा को 'अरुंधती' की बड़की बहू के माध्यम से बड़े अर्थपूर्ण और कलात्मक ढंग से आँका जा सका है। कहते हैं कि अरुंधती एक ऐसा तारा होता है जो मृत्यु से कुछ पहले दीखना बंद हो जाता है। बड़की बहू एक ऐसे ही तारे के समान है जो बदकिस्मती से एक ऐसे परिवार में आ पड़ी है, जहाँ लोगों को उसके गुणों और महत्त्व की अपेक्षा खानदान की झूठी प्रतिष्ठा का दंभ अधिक प्रिय है। वे जिस व्यवस्था के अंग हैं वह मरणशील व्यक्ति की तरह अरुंधती को देख पाने में असमर्थ है। बड़की बहू के गर्भस्थ शिशु को वे इसलिए नष्ट कर देते हैं, क्योंकि लोग कहेंगे कि वह उनके नौकर हीरा का अंश है। सास और दूसरे लोग जब बड़की बहू को काली दवा की शीशी देकर पीने के लिए विवश करते हैं तो दुख उसे अपने मरने की कल्पना से उतना नहीं है, जितना अपने अजन्मे को नष्ट कर देने की

CamScanner

वैचारिक भयावहता से है। जिसके लिए मनाई गई मनौतियों में उसके साथ कभी वे लोग भी शामिल थे, जो आज उसे नष्ट कर देने पर आमदा हैं और फिर सब कुछ उनकी इच्छानुसार ही पूरा होता है। कोख सूनी हो जाने पर तंद्रा की हालत में बड़की बहू को लगता है, ''जैसे एक पतले, चमकीले, सुनहले साँप पर कहीं से काजल के ढोंके आ–आकर गिर रहे हैं। देखते–ही–देखते उसका सारा शरीर एक विचित्र चमक से भर गया है और वह उन काले काजल के ढोंकों को चीरती आसमान की ओर उड़ती चली जा रही है। नीचे हजारों हाथ हैं जैसे बाजरे की फसलें हिल रही हैं। सारा आसमान उसकी जय–जयकार से गूंज रहा है।'' अरुंधती। और वह है कि निरंतर पृथ्वी से दूर, बहुत दूर होती जा रही है। 'धरातल' कहानी में लेखक इस तथ्य को रेखांकित करना चाहता है कि भारतीय समाज में आज भी स्त्री की बदतर स्थिति पुरुष के कारण ही है और अलग से जैसे उसकी अपनी कोई सत्ता है ही नहीं। एक विधवा युवती द्वारा उसके सारे आर्थिक और शारीरिक शोषण के बावजूद पहले लल्लन और फिर शिवमंगल और अंत में कस्बे का डॉक्टर सतीश का भला आदमी लगने का संकेत कहीं–न–कहीं इस विडंबना को ही उभारता है। सबकुछ देकर भी जो थोड़ा–कुछ उसे मिल पाता है, वह भी क्या स्थायी रूप से उसका हो पाता है? ''मेरा हक मुझे मिल गया। रहने के लिए पर। गुजर करने भर खेत और जमीन मैं बार–बार पूछती हूँ कि इस दौर से निकलकर मैं क्या बची। अब यह दमतोड़ स्थितियाँ नहीं हैं। वह भय, वह शंका सभी कुछ खत्म हो गये हैं। मैं जानती हूँ कि इस जिंदगी में मुझे कीमत चुकानी पड़ी है। दुनिया में शायद कुछ भी बिना कीमत चुकाए नहीं मिलता। सोचना सिर्फ इतना होता है कि क्या देकर क्या पाया गया, और इस पूरे हिसाब–किताब के बाद भी यदि मैं खुश हूँ, तो आप जानते ही हैं कि मैं चीजों के बारे में क्या सोचता हूँ।''

वस्तुतः भारतीय समाज में कहीं स्त्री सामाजिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों की शिकार 'रेती' की गंगा बहू की तरह, तो कहीं 'वशीकरण' की बहू की तरह सास–ननद के बोल–कुबोल की प्रतिक्रिया में वह साक्षात् चण्डी बन जाने को मजबूर है। लेकिन थोड़ी–सी सहानुभूति और अपनत्व वशीकरण की तरह उसका कायाकल्प भी कर सकता है। 'बेहया' की सुभागी की तरह अपने शरीर का व्यापार छोड़कर वह अपनी लड़की को इस नरक से बचाने के लिए कठोर संघर्ष भी करती है और एक नरक से निकालकर दूसरे नरक में झोंक दी जाकर भी वह अपनी प्रतिक्रिया और व्यवहार को संयत रख सकने का हौसला भी दिखाती है। 'कर्मनाशा की हार' के भैरों पांडे में अंततः यह समत्वपूर्ण विवेक जागता ही है कि टीमल मल्लाह की विधवा लड़की फुलमतिया के लड़का जनने से ही कर्मनाशा में बाढ़ नहीं आयी है। अंधविश्वास और निहित स्वार्थों के कारण फैलायी गयी अफवाहों का प्रतिवाद करने के लिए वे आगे आते हैं और बखरी के रूप में अपने पूर्वजों की ढहती हुई मर्यादा की चिंता किये बिना फुलमतिया के लड़के को अपने कुलदीप की संतान होने का नैतिक साहस दिखाते हैं। वस्तुतः उनके इस साहस में ही जड़ समाज की कर्मनाशा की हार और एक नए समाज के अभ्युदय का संकेत निहित है।

निष्कर्ष

अन्त में कह सकते है कि शिवप्रसाद सिंह जी ने नन्हों, कबरी, सुभागी, तिउरा, बड़की, शीला, सत्ती, सिजोगी, श्यामा आदि पात्रों के माध्यम से अभिशप्त जीवन की वेदना को मुखरित किया है। कुल मिलाकर हमारे स्वार्थी समाज में नारी न बेटी है, न पत्नी, न बहू और न माँ, वह तो मनोरंजन का साधन है, पैरों की जूती है, बिकाऊ माल है, पर स्त्री नहीं है। शिवप्रसाद सिंह जी की कहानियाँ नारी जीवन के उतार–चढ़ावों के विविध मोड़ों को दर्शाते हुए भारतीय नारी–जीवन के इतिहास का बोध कराने में समर्थ हैं।

संदर्भ

1. शिवप्रसाद सिंह, अरुणेश नीरन, पृ. 10
2. प्रश्नों के घेरे, संख्या राजेन्द्र अवस्थी, पृ. 201
3. अंधकूप, शिवप्रसाद सिंह, पृ. 24
4. वही, पृ. 37
5. वही, पृ. 113
6. बही, पृ. 113
7. एक यात्रा सतह के नीचे, शिवप्रसाद सिंह, पृ. 20
8. वही, पृ. 160
9. कहानीकार शिवप्रसाद, आलेख, मधुरेश, पृ. 146
10. अंधकूप, शिवप्रसाद सिंह, पृ. 179

CamScanner